

मलती पोटेले लक्ष्य शिक्षण - इस श्रृंखला लक्ष्य शिक्षण की प्रणालि लक्ष्य पोटेले शिक्षण के बियोजो में होती है।

- ये गर्भावस्था के रखन में भी प्राल की जा सकती है।
- ये लक्ष्य शिक्षण कार्य कागज पर ही प्रकर के शिक्षणों में करता करती है।

व्यक्ति लक्ष्य शिक्षण - ये लक्ष्य शिक्षण कार्य पर्युषा स्तर में पायी जाती है।

- बच्चों की अपेक्षा बच्चों में ये अधिक पायी जाती है।
- दानि पूर्ति हेतु ये आवश्यक होती है।

प्रकार - शिक्षण क्षेत्र की दायता के आधार पर -

1. मलती पोटेले लक्ष्य शिक्षण - उपस्थिति - अस्थि मज्जा, कभी कभी, अन्त वगैरे आदि।
2. औरलिंगपो पोटेले लक्ष्य शिक्षण - उपस्थिति - लिम्फाइट ग्रन्थि B- T शिक्षण (ले B C)
3. सूरी पोटेले लक्ष्य शिक्षण - उपस्थिति - मज्जा आदि।

उपयोगिता - -चित्रिय की प - योग निदा, अंगों व श्रृंखला

लक्ष्य शिक्षण कार्य को एक एक अनुसंधान के साथ लक्ष्य शिक्षणों एक धारी एक शिक्षणों को दूर करने में उपयोगी है।

शुष्कीप लक्ष्य क्रिया : शुष्क की प्रयुक्त अवस्था में प्राप्त की-  
 गई क्रियाओं को 'शुष्कीप लक्ष्य क्रिया' कहते हैं।  
 इन लक्ष्य क्रियाओं में शरीर के लगभग प्रत्येक-  
 भाग का नियंत्रण किया जा सकता है।

• विभाजित होने की क्षमता के आधार पर इन्हें-  
 दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

• शुष्कीप लक्ष्य क्रिया -  
 -> लोरी पोल्ड लक्ष्य क्रिया  
 -> लूरी पोल्ड लक्ष्य क्रिया

लोरी पोल्ड शुष्कीप लक्ष्य क्रिया :

- नियंत्रण - 'अंडांतु' तथा 'शुक्रांतु' क्रियाओं के नियंत्रण में  
 • 'जाइगोट' (zygote) के शुक्रांतु नियंत्रण से-  
 भाग - भी काफी प्रभावित होती है।  
 इन लक्ष्य क्रियाओं में पूरे जीव का नियंत्रण  
 किया जा सकता है।
- मानव क्लोनिंग में प्रयोग
- आमतौर पर 'शुष्कीप लक्ष्य क्रिया' के 'की-  
 लक्ष्यता' की गई है।

हालांकि -

- शुष्कीप लक्ष्य क्रिया प्राप्त करने के लिए  
 शुष्क की प्रत्येक भाग का नियंत्रण करना पड़ता है।  
 • चिकित्सीय शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में  
 प्रयोग हो रहा है।

Q 3

3 A] रस्य को शिकार ऐसी कोशिका होती है नियमों शरीर के कियी था आगे के कोशिका के रूप में विद्यमान होने की क्षमता लिखकर होती है। रस्य कोशिकाएं कहलाती हैं।

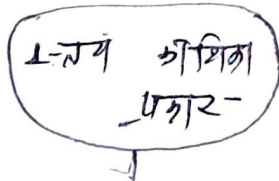
रस्य कोशिकाओं में रस्य लक्षण पाये जाते हैं कि ये शिकारा उस अपनी संख्याओं को तार्किकता तक बढ़ाती - रहती है।

साथ ही ये कोशिकाएं कुछ निश्चित कार्यात्मक कर्तव्यों को ग्रहण करने के बाद विशिष्ट कोशिकाओं में विभक्त हो सकती हैं।

• रस्य कोशिकाएं बड़े कोशिका कीप जीवों में पायी जाती हैं। ये कोशिकाएं शरीर के वास्तुस्थिति भाग को ठीक करने में उपयोगी होती हैं।

रस्य कोशिका :- प्रकार

रस्य कोशिकाओं की उनकी उत्पत्ति (मूल) - कार्य के आधार पर कई रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है।



• श्रुणीय रस्य कोशिका

- लोरी पोटेज रस्य कोशिका
- लबरी पोटेज रस्य कोशिका

• वयस्क रस्य कोशिका

- मलरी पोटेज 5.0
- शालिणी पोटेज 5.0
- श्रुणी पोटेज 5.0
- उत्पत्ति 5.0



2. J. TRIPS - जो आगत ट्रेड रिलेटेड ऑफेन्स 318 डी.एन.टी. प्रोपर्टी राइट' में है। यह WTO द्वारा संचालित - अंतर्राष्ट्रीय संविधि है। इसमें बौद्धिक संपत्ति के अधिकारों के न्यूनतम मानकों को तय किया गया है।

यह विश्व व्यापक संगठन के समर्थन किये गये कई समझौतों में से एक है।

• TRIPS को 1994 में इसे आरूप में कार्य करके यह अंगीकार किया गया।

• TRIPS मान संरक्षक के बौद्धिक संपत्ति अधिकारों की चर्चा करता है।

1. प्रतिलिपि प्राप्त करने तथा अन्य संबंधित अधिकार (कॉपी राइट - एण्ड रिलेटेड राइट)

2. ट्रेड मार्क

3. भौगोलिक उपादान (G.I)

4. औद्योगिक डिजाइन

5. पेटेंट

6. इंटी ग्रेटेड सर्किट की डिजाइन (Layout a Topo Graphy Design)

7. आप्रवाशित सूचनाओं का संरक्षण (Disclosure of Unpublished Information)

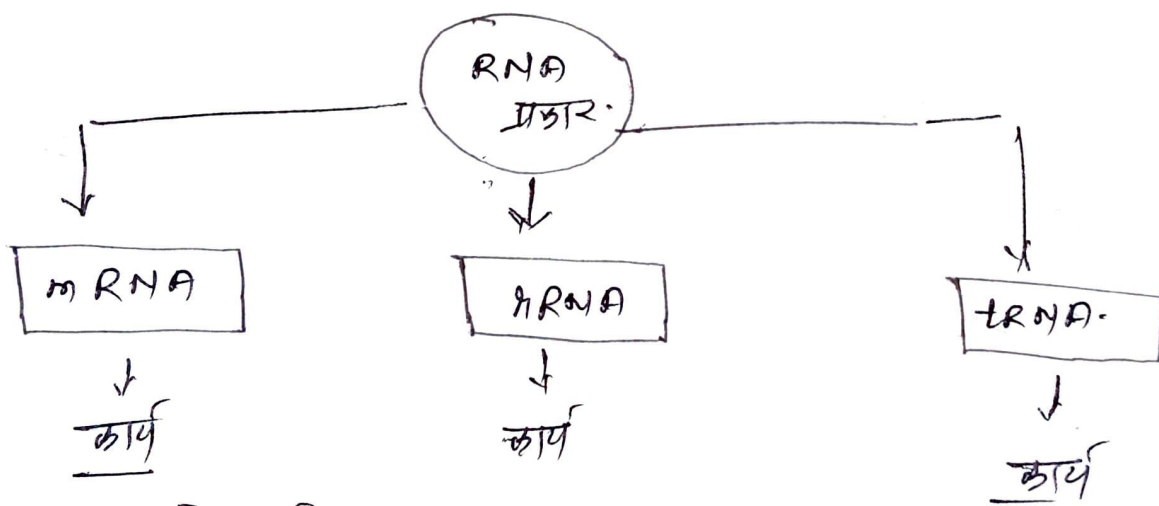
TRIPS, WTO के सदस्य देशों को बौद्धिक संपत्ति के अधिकारों के अनुपालन के लिए बाध्य करता है। नियमों शरत पर - शासित है।



21] RNA एक एकल कुंडलित संरचना है, जो कोशिका द्रव्य में विलयन होता है। यह मुख्य रूप से प्रोटीन संश्लेषण की प्रक्रिया में भाग लेता है।

- यह एक 'गैर आनुवांशिक' पदार्थ है।
- यद्यपि यह विशेषताओं जैसे वायरस (TMV) और प्रोटीन के आनुवांशिक पदार्थों की तरह कार्य करता है।
- RNA विभिन्न रूपों में पाया जाता है।

RNA के प्रकार - कार्य के आधार पर इनका वर्गीकरण तीन प्रकार में किया जा सकता है।



• DNA से अणु के संश्लेषण की प्रोटीन संश्लेषण करने पर लगे का कार्य

• राइबोसोम के संरचनात्मक भागों में सहायता प्रदान करना

• अमीनो अम्ल को प्रोटीन संश्लेषण करने के लिए लेना

• यह प्रयोग (पारसीप जीन सिद्धांत) को tRNA की संरचना के अध्ययन के लिए 1968 में विरोचन तथा शार्क होले के साथ 'नोबल' पुरस्कार मिला।

2H] CDAC का अर्थ - मॉडर केंद्र डेवलपमेंट आउट स्ट्रॉन्ग -  
कम्प्यूटिंग है।

- इच्छा - 1988 युवा
- उद्देश्य - 'सुपर कम्प्यूटर' का नियमि करना
- फोकस - इलेक्ट्रॉनिक्स और युवा प्रौद्योगिकी

नवीनीकरण - यह एक अनुसंधान एवं विकास संगठन है।

• युवा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में CDAC की श्रुति

- सुपर कम्प्यूटर का नियमि इच्छा पर्य 'अदि'
- पर्य 8000 - 1991 में विक्रय - भारत का पहला -  
'गीगा' स्तर का कम्प्यूटर
- पर्य - 10000 - 1998 में विक्रय - क्षमता - 100 -  
'गीगा फ्लॉप' - पीछे कम्प्यूटिंग मार्केट का -  
सुपर कम्प्यूटर
- पर्य पर्य - वर्ष 2012 में विक्रय -  
क्षमता - 4 टेरा फ्लॉप
- पर्य युवा - वर्ष 2018 में विक्रय -  
क्षमता - 54 टेरा फ्लॉप
- प्रत्युप - वर्ष 2018 - भारत का सबसे तेज सुपर कम्प्यूटर  
गति - 6.8 पेटा फ्लॉप

इस सुपर कम्प्यूटरों की परामर्श में मॉडर सर्वोत्तम युवा एवं  
सुसज्जित जैसे आणविक प्रकृति में ह्यपक संस्करण मिल सकता है।

- 28] नैऋत मीनारों विभिन्न रूप से 'मीनारों' व 'विजली' का समझाया है।
- यह समझाया पावर विद्युत कंपनियों (डिप्लॉय) के उपयोगों के बीच होता है।
- इसके अन्तर्गत कंपनियों ने ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे अपनी दल पर मीनार स्तंभ में लगी हुई विजली 'ग्रीड' को बेची जा सकती है।
- इसके लिए मीनार स्तंभ के साथ एक 'मीनार' लगाया जाता है। यह मीनार विजली विद्युत कुख्यातों के द्वारा दिया जाता है।
- मीनार द्वारा किना मीनार विजली का उत्पादन हुआ और किना रूप से एवं किना ग्रीड में गई, इसका विचार रखा है।
- इससे डिप्लॉय आय उपयोगिता को प्रकट की गई विजली का उपयोग भी रहता जाता है।

विद्युत प्रणाली

[ ग्रोव → मैक पैकल → विद्युत उपयोग → मीनार विजली → अतिरिक्त 'ग्रीड' ]  
 नैऋत मीनारों में उपयोगिता एवं विद्युतों के प्रत्येक परस्पर रूप से नैऋत ऊर्जा का उत्पादन, निष्काय एवं उपयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है।

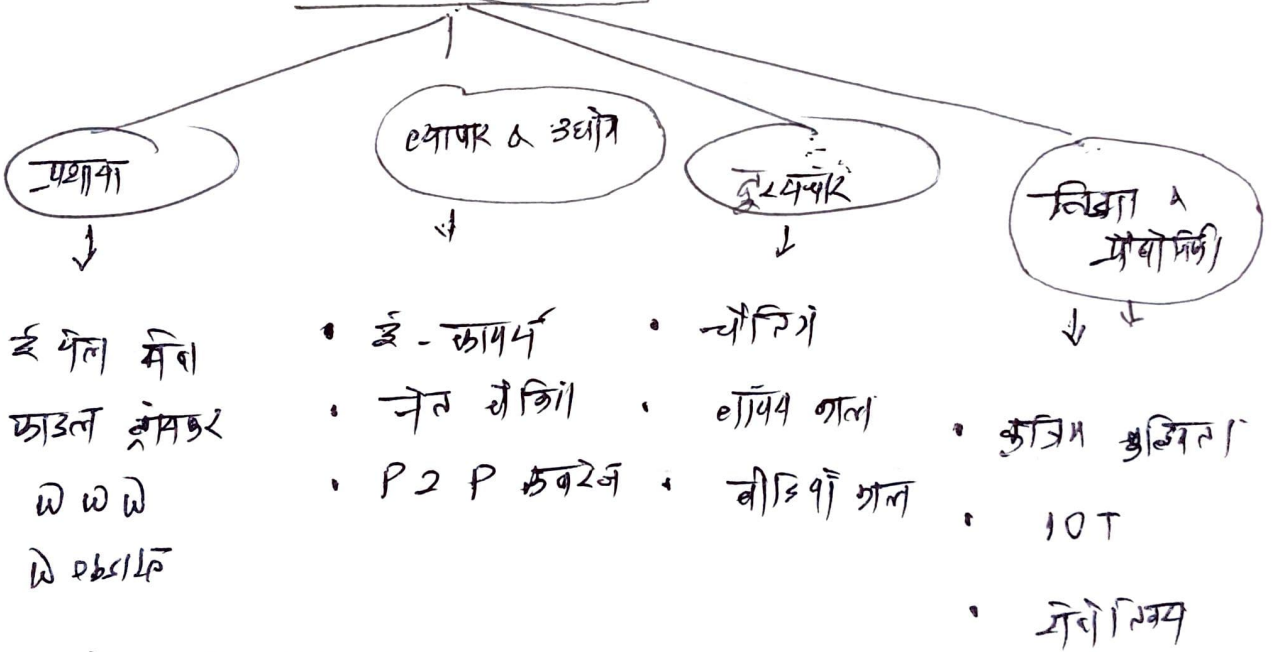


2F] इन्टरनेट में आणविक परस्पर संबद्ध नेटवर्क (इंटरनेट) का मूल इन्टरनेट कहलाता है।

इस नेटवर्क का आणविक जोड़ों का अर्थ 'ISP' (इंटरनेट प्रोवाइडर) कहलाता है।

इन्टरनेट का प्रयोग वर्षों के समय में जीवा के क्षेत्र में देखा जा रहा है। कुछ प्रमुख अनुप्रयोग निम्न लिखित हैं :-

**इन्टरनेट अनुप्रयोग**



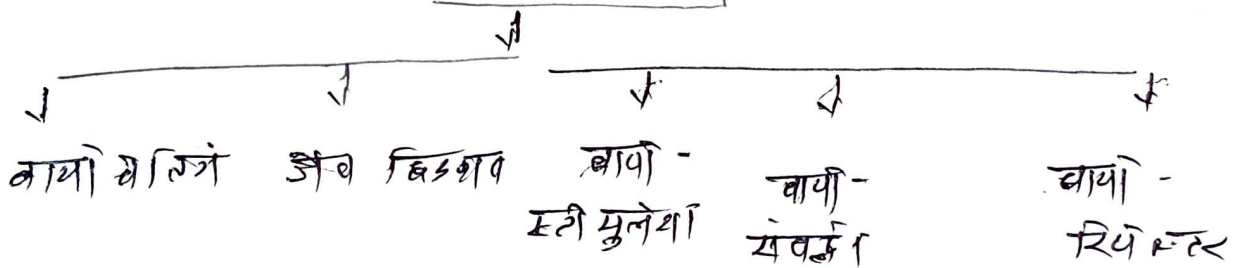
इन्टरनेट में 'वैश्विक' प्रकार प्रणाली के माध्यम से लोगों को जोड़कर मानवीय का एकीकरण कर उनके साथ रहना और दायित्वों को सुनिश्चित करने में लोगों पर प्रेरणा प्रदान करता है।

भारत में भारत नेट परियोजना (ग्राम पंचायत) डिजिटल भारत अभियान के माध्यम से जन जन तक इंटरनेट के माध्यम से शायदीय योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित कर रही है।

- 2E] जैव उपचार का अर्थ चुनने जीव, जीवाणु, कवक आदि का प्रयोग कर प्रदूषित मलमल को कम प्रदूषण पदार्थों में परिवर्तित करना जैव उपचार कहलाता है।
- इसके द्वारा किया गिरे हुए स्थान पर पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करने का प्रयास किया जा सकता है।
  - जैव उपचार 'कचरे' के विनाश के माध्यम से कार्य करता है।

प्रमुख जैव उपचार तकनीकी

जैव उपचार तकनीकी



अन्य विधियाँ

- बायो-रिफाइटेशन तकनीक
- आर्बल जैफर
- आयली बोय 5

आर्बल जैफर :- अनिवार्य रूप से यह प्रायः शिन्व सेन्ली-रियल होते हैं। जो एक तरह का प्रायः (प्रकार) के साथ रिचर और मिश्रण होता है। यह कच्चे तेल एवं तैलीय शोध में मौजूद कवक द्वारा प्रदूषण को हटा लेते हैं और उन्हें बाकिरहित जल से परि वर्तित कर देते हैं। पर्यावरण संरक्षण और संधारण में उपयोगी हैं।

2D] कम्प्यूटर द्वारा वास्तविक जीवन की आधारभूत इकाई 'प्यु बिल्डिंग' होती है। यह कम्प्यूटर द्वारा वास्तविक जीवन, जैसा की हम जानते हैं। और इसे वास्तविक जीवन के वास्तविक उपयोग पर आधारित है। यह वास्तविक जीवन के विषयों और परिणामों को ध्यान में रखता है, इसकी गति, तथा इसके व्यवहार के आधार पर कार्य करता है।

• कम्प्यूटर इसके कम्प्यूटिंग की अवधारणा यह है कि आंकड़ों को प्रस्तुत करने, तथा उन्हें ध्यान में रखकर वास्तविक जीवन के गुणों का तथा आंकड़ों को संश्लेषित करने के लिए वास्तविक जीवन का प्रयोग किया जाएगा; आनु प्रयोग :-

1. परमाणु कि स्तर पर व्यवस्थाओं को बनाने के लिए
2. सूचकांक का आधार '0 1 1' 0 और 1 का
3. एक मात्र प्रयोग  
सूचकांकों को मुख्यतः क्रिष्ण गुणों से बनाने के लिए जाना जाता है, एक मात्र उन्हें ध्यान में रखकर किया जाता है।
4. कार्मिक का प्रयोग बनाने से प्रभाव
5. आर्थिक मापदण्डों को ध्यान में रखकर प्रयोग
6. 'गूगल' ने वास्तविक सुप्रीथी का दायित्व लिया है। इसके अलावा 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' '101' आदि से एक प्रयोग किया जा सकता है।



2 c] भारत के पर्याप्त वैज्ञानिकों में एक प्रमुख नाय राजा-  
 रमना । का भी ही राजा रमना का जन्म -  
 कर्नाटक में हुआ । 1925 में जन्म रमना ने  
 बिनाए एम आरओ सिस्सी के नाम से मद्रास में  
 योगदा दिया । उनके परिवार को देखते हुए ही  
 1973 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।  
 बिनाए एम आरओ सिस्सी में उनका प्रमुख योगदान -  
 निम्न लिखित हैं :-

1. पर्याप्त ऊर्जा एवं रक्षित के बिना ही प्रथम वैज्ञा-  
 निक शोध का विरीक्षण कर सक्ता है।
2. भारत के प्रथम पर्याप्त प्रदीक्षण कार्यकर्ता 'स्मार्ट लिमिटेड' के  
 के. एल. के मुखिया के रूप में।
3. स्वामी मंत्री के वैज्ञानिक मन्त्रालय के रूप में।
4. DRDO प्रमुख का कार्यभार संभाला
5. नाथी कीप विस्फोट के नाम से।
6. 'ध्रुव' रिपेपर बनाने में विशेष योगदान।
7. स्मार्टलिमिटेड 'ध्रुव' का प्रदीक्षण  
 पुस्तक रचना - के रूप में  
 देखते हैं। और अधिक उपकरण एवं
8. आत्म रक्षा - ईशर्या आरक जिल सिस्सी

भारत सरकार द्वारा उनके योगदान को अधिक स्वीकृति देने के  
 लिए इ-पौर (पद्म) में राजा रमना को एक उच्च -  
 पुरस्कार दिया गया है।

अर्जा की नवीन तकनीकी एवं उद्योग मूलक कृतियों में संकेत का ध्यान रखा गया है। विदेशों में आयात पर आर्थिक बोझ कम किया है।

3. तकनीकी - क्षीणता : एवं जागू करा अर्जा के उत्पादन प्रवर्धन एवं संरक्षण संस्था तकनीकी ज्ञान एवं अर्जा की कमी पायी जाती है। अर्जा के प्रवर्धन संस्था ज्ञान का अभाव का कारण संरक्षण में जागू करा का अभाव

4. पर्यावरण संरक्षण चुनौतियाँ - पर्यावरण अर्जा शो में -

अत्यंत अर्जा के आर्थिक खर्च एवं लागत प्रकृति एवं वैश्विक तापमान में हानि हो रही है।

5. नवीन आविष्कार एवं अत्यन्त - अर्जा के वैश्विक शो में अर्जा उत्पादन करने के लिए वन, जल, वायु आदि का नित्य तेजी से हो रहा है। जो अत्यन्त व्यापक स्तर पर संकेत एवं पारस्परिक अंतर्गत को जन्म दे सकती है।

6. वर्धनी उपयोगवादी संस्कृति :- वैश्विक अर्थव्यवस्था के अद्युक्तकरण की प्रवृत्ति ने हमारे जीवन शैली और लक्ष्य व्यवहार में व्यापक बदलाव लाये आये है।

इन मुद्दों के अतिरिक्त मानव विकास को सुनिश्चित करने के लिए जीवन शैली में बदलाव और अर्जा की अहमियत को मजबूत कर सर्वोत्तम प्रवर्धन की जरूरत है।

2 B] - अर्जा किया थी देश के विकास का इंजन बनी है।  
 किया देश में प्रति व्यक्ति लगे वाली अर्जा की अपन-  
 वला के जगह स्तर का मुख्य है। उन्हा ही तबी-  
 आर्थिक विकास का भी अर्जा उपयोग के साथ मजबूत  
 शकल होता है। भारत जैसे देश में आल निर्दिता श्री  
 प्राप्त करी के लिए अर्जा प्रकथा की मदद आसता है।  
 अर्जा प्रकथा के लिए वेबसाइट अपन और बिना अ-  
 जकल है।

सरकार जय प्रथा :- गोवर्धी चोकरा - कच्छि -  
 वायी धनजी श्व पर्याय्य मच्छण की बनी।

\* वायोपय के प्रयोग में बिल्ली उच्छा।

अर्जा प्रकथा में सर्वोच्च मुद्दे :-

भारत में वनी जन मच्छा तथा अर्जा के उपयोग की-  
 वनी माता के साथ पर्याय्य पुनर्निर्माण की उच्छा  
 प्रयोग मुख्य हो रही है।

अर्जा प्रकथा में सर्वोच्च मुद्दे -

1) वनी आसनी :- भारत की आसनी विद्य में  
 है। इस आसनी अर्जा उपयोग करी की कर भी भारत में  
 बनी है। लिहाजा आसनी के उपयोग के लिए प्रचुर  
 मात्रा में अर्जा का उत्पादन करना आवश्यक हो जाता है।

2. निम्न आर्थिक वृद्धि कर :- भारत की विकास दर महान कर  
 में व्यापक विचार देनी जा रही है। लक्षित धर्म कर  
 9 में वास्तविक शक्ति कर 4 के आसपास है।



2A] वायरलेस संचार प्रणाली में वाई कार्ड (Wi-Fi) और लॉर्ड कार्ड (4G) का उपयोग तब तक है।

इन दोनों तकनीकों में कुछ विषय हैं और- और स्वयं तब तक आते हैं।

क्र. सं.	वाई कार्ड (Wi-Fi)	अंतर	लॉर्ड कार्ड (4G)
1.	रेडियो तरंगों	गोबल	दृश्य प्रकाश (Visible light)
2.	उच्च गति और कम लागत	सीमा स्थिति	प्रकाश की गति की परत तक
3.	उच्च गति	स्थिति	अपेक्षा कम लागत
4.	हैडियम में सुदृढ़	सुदृढ़ता	हैडियम में सुदृढ़
5.	सुरक्षित	सुरक्षित	आवधिक 1 LED
6.	प्रकाश की सीमा नहीं	सीमा	4 क्यूबिक मीटर
			प्रकाश की उपस्थिति अनिश्चित

इन दोनों संचार प्रणालियों की अपनी-2 क्षमताएं हैं। फिर भी तीनों के जोड़ा एक और कार्य की दक्षता है। कुछ वक्तों में दोनों की तकनीक - संयुक्त तब तक है।

13] QR code का अर्थ 'एक व्यक्ति पहचाना पहचाना वाली' है।  
 • यह एक भव्यता पहचान। आदिभूत ' - बार कोड -  
 होता है।  
 • उपयोग - व्यापारिक गति निबधतां जैव - उत्पाद -  
 इनके तक के रूप में .

14] SWAN का पूर्ण रूप 'स्मॉल वाटर शरिया नेटवर्क'  
 है। यह एक ई गवर्नेंस की परिधि बना है,  
 जिसमें मकानी विचारों, उपकरणों को जोड़ा गया है।  
 • 51 जिला, 09 मार्केटिक उपकरण तथा 11 कर्मचारी -  
 SWAN से संबद्ध है।

15] प्रवल अम्ला का आशय उन अम्लाएं हैं जिन्हें  
 PM भाग 1-3 तक होता है।  
 यह जल में विघटित होकर हाइड्रो जल आण (H<sub>2</sub>O) -  
 प्रवाह करते हैं।  
 • उदाहरण - हाइड्रो-मॉरिफिक अम्ला : HCl, H<sub>2</sub>SO<sub>4</sub> आदि

1 H] DSLV - XL का अर्थ धुंधीय संकोच या झूठप

- आंश अपेक्ष है।
- 3 मरी 6 इन्च आत धुंध ' कगे वने है जो सर सदा शायत की आथ एकि कर्ते है।
- DSLV - XL का उपयोग - सड्या . माल या ये

1 i] जैनी कण का रसाय अर्थ कियी पदार्थ के का का आकार  $10^{-9}$  म री है।

- जैनी कण एक में माँ जैनी मात्र तक शर रखती सले कण होते है।
- अनु प्रयोग - सयत्र अधोग। चिकित्सा (ND) (D.L.) कृषि और लवय, अंतरिक्ष प्रस्था

1 j] क्षेत्र विधि गणित की एक शाखा है जो 'मापा' में अवस्थित है।

- मापा में विधेपत्र : ज्यामितीय आकृतियाँ के - दोगफता एवं अथता के मूती की निष्पत्ति एवं उनके प्रयोग में संपर्क रखती है।

1 k] सक्रिय रि धातु योजिता में अल्पक स्वयं ऊर्जा का उत्सर्जन करते तथा परिभाषात एवं परावर्तित ऊर्जा का संचार करते है।

1 L]. जब आसोफि तल एवं त्रि-वर्णा की दिशा-एक सपा होती है तो उसे सजा सलक कार्य-कहा जात है। [W = F. ΔL]



1D] माइरोसॉडिया केवल यूकेरियोटिक कोशिकाओं में पाया जाता है।

कार्य - श्वसन क्रियाओं का संचालन

कोशिकाओं का ऊर्जा स्रोत (अर्थात् ATP) के लिए संचालित करता है।

1E] अणु विविधता जैव विविधता माप का एक प्रकार है।

• किसी प्रदत्त क्षेत्र में प्रजातियों की कुल संख्या का अनुपात-विविधता कहते हैं।

• विभिन्न क्षेत्रों के जैव विविधता के तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी।

1F] कार्बन चक्र प्रक्रिया का अर्थ किया जाता है, जहाँ उत्पाद द्वारा स्थिते जाने वाला कुल कार्बन उत्सर्जित है।

• कार्बन का उत्सर्जन  $CO_2$  या ग्रीनहाउस गैसों के रूप में होता है।

• कार्बन चक्र प्रक्रिया पारिस्थितिकी चक्र प्रक्रिया का एक अंग है।

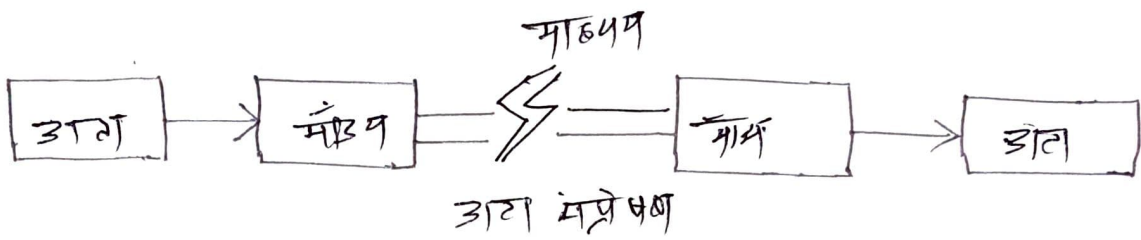
• यह 'जीवाणु' विज्ञान का अंग है।

1G]

Q. 1

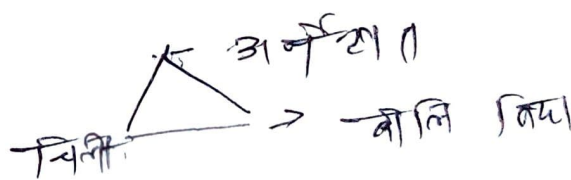
1A] चाँडम का पतान्म अर्थात् माडु लेंया - डि माडुलेंया में है।

इस उपकरण में एक ही युक्ति में माडु लेंया डि माडु लेंया बर्ग रहते है।



1B] लिफियम का मापनिक दृष्टि से 'कार्बो' यथार्थ का रूप अत्यंत अधिक क्रियाशील, ठोस एवं मजबूत धातु वाला होय पर्याप्त है।

- मादन में 'कमलिक' में पाया गया, और गुणधर्म में 'प्रयुक्त लिफियम एनाल' प्रस्तावित है।
- इस संकेत पर (वर्कट गैरुड) या 'नया जेन' माना जाता है।
- यह ऊर्जा संचयन में उपयोग से करता है।
- लिफियम त्रिकोण



1C] कीदूष ग्रंथि मानव शरीर की सबसे छोटी अंतःस्रावी ग्रंथि होता है।

- अवस्थिति - पित्त स्राविका (मातृका - स्त्री 11/12 वीं)
- अन्य अंतःस्रावी ग्रंथियों के स्रावण को नियंत्रित करता है। 'मायूर' ग्रंथि।

पारिस्थितिकी पदचिह्न की गणना की आने विधि का जिनमें इतरात्मक अवयव का प्रयोग कर गणना की जाती है।

गणना विधि - - - - -

- जीवमंडल की उपलब्धता
- मनुषी शक्ति की बला
- जैविक उत्पादों की गणना

पारिस्थितिक पदचिह्न का महत्व

- मानव के 'उपयोग' के स्तर की जांच
- अर्जा लक्षण 'शुद्ध' माप' का सूचक
- जैविक उत्पादों का सूचक

पारिस्थितिक पदचिह्न किसी देश की आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर की बेहतर को मापने का एक माध्यम है। यह पर्यावरण पर मानव प्रभाव को मापने का एक प्रयोग करने का भी इन्ति करता है।



30] पारिस्थितिकी पद चिह्न पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्रों पर मानवीय प्रभाव का एक मापक है।

यह इंसान की प्रभाव की तुलना पृथ्वी की शुद्ध-उत्पादन की क्षमता में करता है।

यह मानव-आनंदी द्वारा उपयोग किये जाने वाले-संसाधनों के शुद्ध उत्पादन एवं उसी उत्पादन अपशिष्ट के अवशोषण और इसे क्षतिरहित वास्तविक जीवन के लिए जरूरी जैविक उत्पादन शक्ति और मनुषी क्षमता की मात्रा की दशांति है।

वर्ष 2006 के लिए मनुष्य जाति के कुल पारिस्थितिक पद चिह्न की 14 पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण शक्ति तथा गणना आयति थाव जाति पारिस्थितिकी से बाधा का उपयोग - पृथ्वी आय उसके सृजा की तुलना में 1.4 गुणा तेजी में करने है। प्रति वर्ष 52 पर्यटन की गणना की जाती है। 21 प्रमुख राष्ट्र इसके आठों का एकत्र एवं - प्रकाशा करता है।

नवीन रूप आठों के अनुसार पारिस्थितिकी पद चिह्न-1.6 है। इसकी गणना जमा (गणना तथा संयोजक) में की जाती है।

आठों के एकत्रण एवं उनके विशेषण के अनुसार पारिस्थितिकी पद चिह्न की गणना में तुलनात्मक-धर्म में अंतर पाया जाता है।

पारिस्थितिक पद चिह्न की गणना की एक विशेषता है।

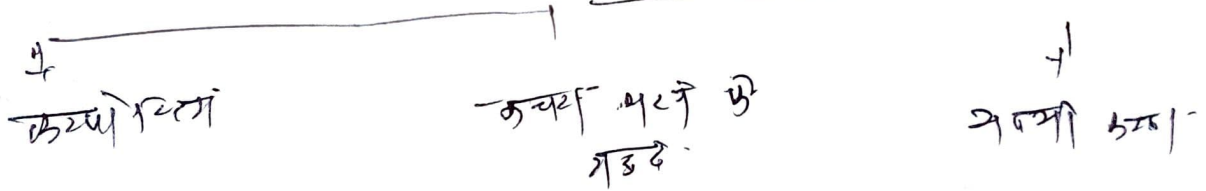
1. Reduce - कमी करना - अथवा शून्य पदार्थों को डाले धोते- धोते उपयोग में लाने का कार्य करना है।

2. Recycle - पुनः चक्रण - इसे नष्ट होने के वाक्य में अवयवों को पुनः चक्रित कर उपयोग में लाने में है।

3. Reuse. पुनः उपयोग - इस विधि में उपयोगी- अवयवों का प्रयोग कर पुनः उपयोग में लाना है।

पि. व. गण्य की अन्य विधियाँ

विधियाँ



कचरोपचार - जबकि अस्सीकरणों का कचरा स्थिर वाक्य में जबकि क्षेत्रों की संभावना में निरक्षरि विद्यमान है।

कचरा पकड़ने के गड्डे - कचरा के गड्डे का निपटारा कर उसे कचरा का संग्रहण विद्यमान है। निदानों की प्रकृति में कचरा कचरा के लिए धोते-धोते गड्डे बनाये जाते हैं।

अस्सी करना: शक्ति उत्पन्न करने की प्रकृति में कचरा को जगह-जगह रूप में परिवर्तित विद्यमान है। इन विधियों के अतिरिक्त जीव शक्ति और जल-वाष्प-वाष्प प्रकृति विद्यमान है।

3 B] अपशिष्ट के शब्द की पार्श्व-अर्थिक - अर्थिक कार्य - होते हैं जिन्हें उपयोग एवं उपयोग प्रयुक्त एवं कर लिया जाता है। उन पदार्थों का प्रत्येक रूप में उपयोग उपयोग नहीं हो सकता है।

इन अपशिष्टों में लोय एवं तत्त्व अपशिष्ट जैसे ईंधन, चिकित्सीय कचरा एवं धरे हुए नालियाँ एवं औद्योगिक कचरा शामिल हैं।

इन कचरों में पर्यावरण एवं शारीरिक दुष्प्रभाव - वातक होते हैं, जो स्वास्थ्य एवं प्रदूषण प्रदूषण प्रदूषण को उत्पन्न करते हैं। इनका निराकरण एवं प्रदूषण - शक्ति में वृद्धि है।

अपशिष्टों का वर्गीकरण : उपयोग एवं प्रकृति के आधार पर इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार किया गया है -

1. लोय अपशिष्ट - ये पदार्थ जो कृषि जैविक प्रक्रिया का विद्यमान नहीं किये जा सकते हैं। लोय अपशिष्टों की प्रायः श्रमणों द्वारा की मिलती है। जैसे - इलेक्ट्रॉनिक कचरा, चिकित्सीय कचरा, धरे हुए कचरा की प्रायः श्रमण आदि।

2. तत्त्व अपशिष्ट के अन्तर्गत औद्योगिक कचरे, धरे हुए नालियाँ पानी के कचरे आदि।

लोय अपशिष्ट प्रदूषण की निषिद्धता की सर्वप्रथमता से उपयोग में लाई जा रही है - निम्न प्रकार है -

4. 3R प्रकृति - इनके अन्तर्गत अपशिष्ट पदार्थों की 3R - Reduce, Recycle, Reuse.



ये मनुष्ये जागृत की अपनी ऊर्जा प्रवाह कर रहा है, जो जैविक एवं अजैविक जागृत के उल्पादि : विशिष्ट विधन में समक होता है।

नवी ऊर्जाय ऊर्जा ग्रोन के एव में 'शौर ऊर्जा' का- विश्व थर में नर्य आविष्कार एव अनुसंधान में- ज्याद में ज्याद अवसोि कने की शक्ति का सिद्धि हो रहा है।

मायन में शौर ऊर्जा की व्यापक मंत्रावाये मौजूद है।

- मायन की विशाल योिगो निक सिद्धि - उच्च कलिचंदीय जलवायु वाला देश है, जहाँ वर्ष थर मूर्य नखी-सपथ तक अवस्थिति दर्ज कयला है।
- एउ अक्या के अनुसर देश के लगभग सय हि एयो में औसत 4-7 किनो वार धंता प्रति का मोर प्रति दिा शौर विशालता एत सग है।

मायन में प्रवाशः

- मायनीय शौर ऊर्जा निगत में वर्ष 2023 तक 7523 लके शौर ऊर्जा उल्पा का लय एरा है।
- मायन में मानर पको की लव्या - शीवा, नखीय
- नर्य मानर पौनलि एव कौरी वीन्ताकि थलो का - उल्पाय
- थार का मरु-खलीय - शरु

उपयोग - विजली उत्पाद।  
स्वाय पकने में  
पर्याय सयकय य

रुकार में शौर ऊर्जा के विशय में नवी नतीक का अकप्रपोि एव असाधा जाय है।

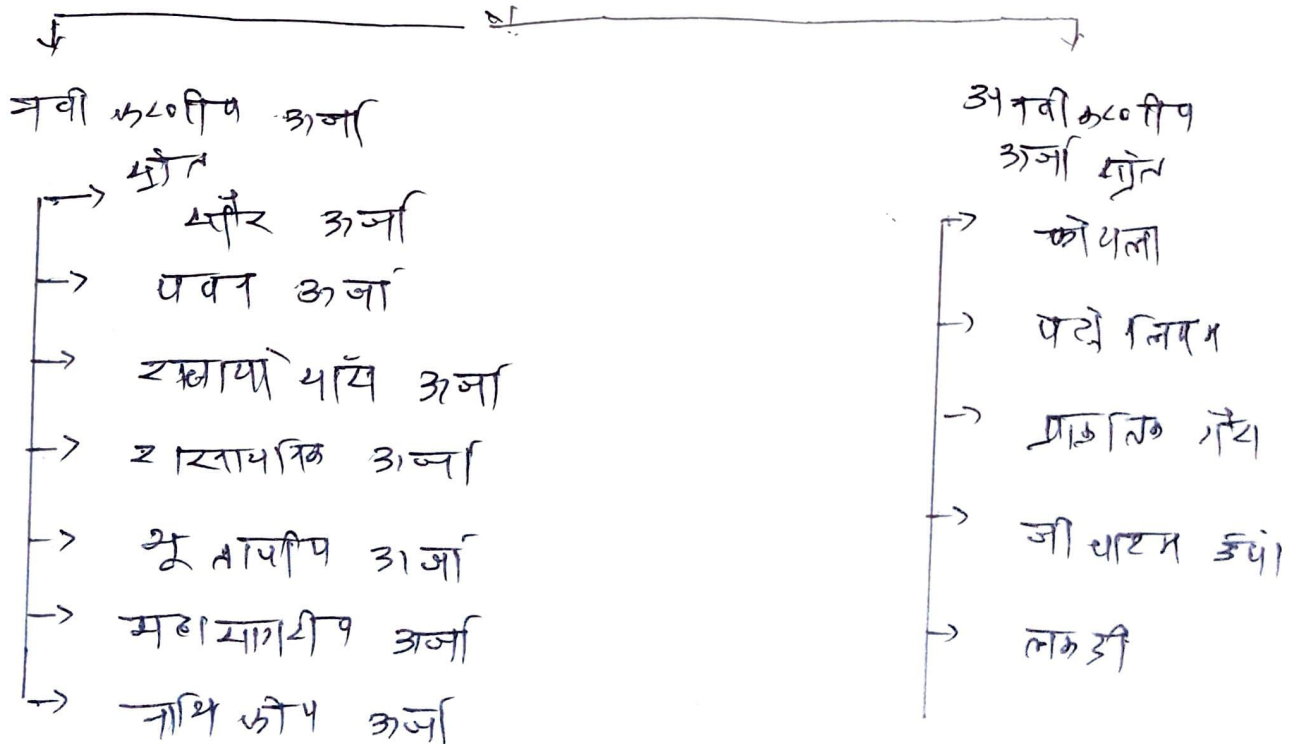
Q. 3

3A] ऊर्जा आर्थिक विकास और जीवा लक्ष्य वेक्टर पारि  
 का आर्थिक आधार है। ऊर्जा संसाधनों का क्रिया  
 क्रिमी देश के 'आर्थिक विकास का सूचक' -  
 होता है। उच्च ऊर्जा में उत्पादों और उनकी उच्च  
 खपत को मुक्ति स्थित कर क्रिमी देश में अर्थो-  
 पिछड़े पन - कुपोषण, एवं अशिक्षा आदि समस्याओं  
 का समाधान किया जा सकता है।

प्रकृति द्वारा निरमित रूप में ऊर्जा प्रदायी की गई है।  
 ऊर्जा के स्रोतों को समुचित नवीकरणीय एवं अनी-  
 करणीय ऊर्जा स्रोतों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

ऊर्जा स्रोतों का वर्गीकरण

ऊर्जा

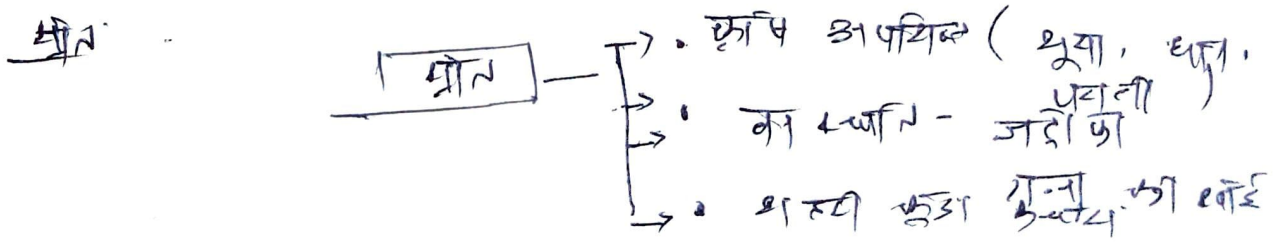


सौर ऊर्जा एक अक्षय ऊर्जा स्रोत के रूप में मरिदा

- यह गर्म धारा ठंडी तथा धाराओं को प्रतिस्थापित करती है।
- इससे पृथ्वी पर के जल का तापमान धाराएं 10°C तक बढ़ जाती है।
- इस प्रक्रिया से जहां मधुर जल के वाष्प की-का अधिक प्रक्रिया बाष्पों से आसक्ति होती है।
- वहीं मुख्य रूप से वायु परतों पर परिकल्पना से विकसित उच्चतम होती है।
- प्रभाव - कभी कभी अति शक्ति एवं कभी अति-वृद्धि होती है। जैसे - अमेरिका के निरुद्ध में आया वर्षा।
- आयी धारा - आस्ट्रेलिया (पूर्वी तट), इंडोनेशिया आदि।
- वेदन से प्राप्त - पंचम वर्ष (प्रत्येक) अगली से के माध्यम से धारा का विचार होता है।

21] ऊर्जा के सौर परांपरण शक्ति से महावाष्पीय ऊर्जा, शून्यापीय ऊर्जा, पृथ्वी ऊर्जा, सौर ऊर्जा शक्ति किचे-जाते हैं। - जैविक उत्पत्ति से निर्मित बायो मास से अन्य सौर परांपरण ऊर्जा का पर्याप्त संकलन से अनुसूचित एवं पृथ्वीय है।

बायो मास (जैव ऊर्जा) कार्य निरंतर स्रोत से उच्चतम ऊर्जा का स्रोत है।





इसके साथ साथ के चार ली सीबी के शुद्ध कलिक-  
उपग्रहों को कहा ये ख्याति मिल जायेगी।

Q 21V - MK-3 विशेषताएं.

Q21V - MK-3 के लक्षण -

• ऊंचाई - 43: 45 मी.

• निचले आँके मास - 640 ली.

• स्तर - 3 चरण

• इंजन - फायो जेटिक - इंजा TE-20

इसके गुणों को कहा कि कल्प 15R0 द्वारा उद्योग-

'Fat Boy' नाम दिया गया है, क्योंकि इसका वजन -

640 ली है, जो लगभग 200 एचएम के वजन के-

वजन है। साथ ही अंतरिक्ष उपग्रह प्रणाली में -

आत्यन्तिक चरम में वर्गीकृत है।

QK] अन्न नीरा, एक जटिल मौसम तंत्र है, जो-  
विश्व के अनेक हिस्सों के जलवायु के साथ संबंधित  
मासू को प्रभावित करता है।

जिसके कारण मासू कमजोर पड़ जाता है।

जिससे मूखे की स्थिति बढती है, तथा यद...

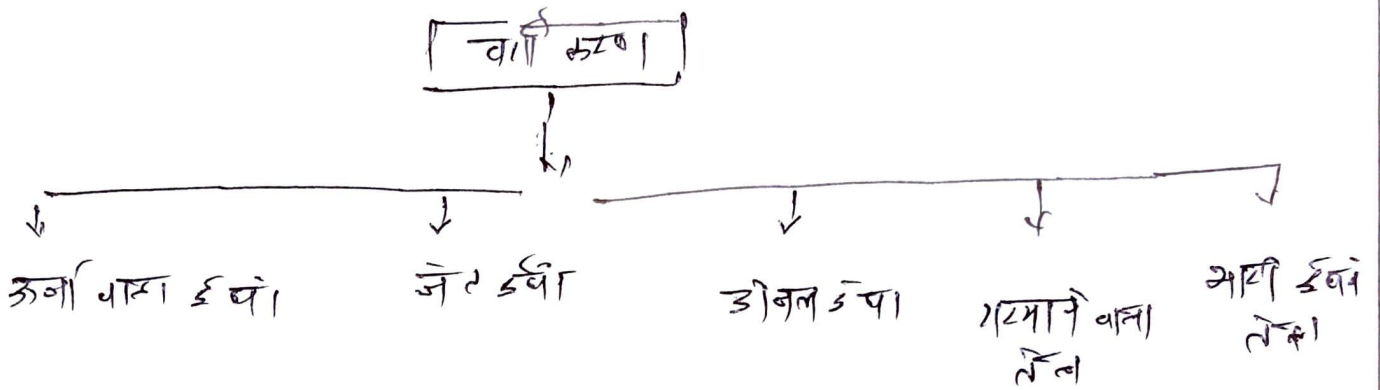
मासू को निर्लक्षित करता है।

वस्तुतः

अन्न नीरा एक गर्म महासागरीय धारा है, जो-

कि पूर्व प्रशांत महासागर में एक तरफ के निकल आकर  
दियुवर धार में प्रकट होती है।

पेट्रोलियम का वर्गीकरण : उपरोक्त के आधार पर नियमित रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है -



- वाष्पों में अर्जा के रूप का परिचयान कर्मों में प्रयोग। जैसे दाल के रूप में वाष्प।
- जल स्रोत - टाकरी के प्रयोग में। बहुत धातु।
- डोमल स्रोत - अर्जा के स्रोत के रूप में प्रयोग।
- आयी स्रोत के उत्पादन में - उद्योगों जैसे, डार, मोम, इस्फाल, आदि के निर्माण में प्रयोग।

इनके अतिरिक्त मरकर, प्राकृतिक गैस, ईंधन, कठिन पदार्थों के रूप में अन्य डाइड्रोकार्बन उत्पादों के रूप में - पेट्रोलियम का प्रयोग होता है।

21]  $UV - A$  -  $3$  को 'आयन का सक्रिय' कहा जाता है। यह 'उद्योग' का विकल्प 'उच्च प्रयोग'। शक्ति स्रोत था है।

अंतर्राष्ट्रीय मानक प्रणाली में नैरो का अर्थ मोटर का अर्थ है 'हिल्ला' माना गया है। एक उच्च आकार के कणों में नये नये नली की क्रिया विराय संभव ही पाया है।

नैरो टैंग्रालोजी अव्योक्ति

- |  |   |  |
|--|---|--|
| <p>↓<br/>अंतर्राष्ट्रीय</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• नैरो टैंग्रालोजी</li> </ul> | <p>↓</p> <p>तकली की जिस</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• गैंग्लियोमा</li> </ul> | <p>↓</p> <p>चिकित्सा</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• NDDs</li> <li>• कैंसर</li> </ul> |
|--|---|--|
- चिकित्सा क्षेत्र में अव्योक्ति
- कैंसर जिन अंगों में स्थित (नैरो टैंग्रालोजी के अर्थ में)
  - बुलाए जाने की दर कम है - नैरो टैंग्रालोजी
  - MDDs - नोबल ड्रग डिपेंडेंसी चिकित्सा - दवाओं को गंतव्य तक पहुंचाना।

नैरो टैंग्रालोजी का अर्थ प्रयोग जी। संख्या की यादों के उपचार में किया जा सकता है। जैसे हीरो अस्मि

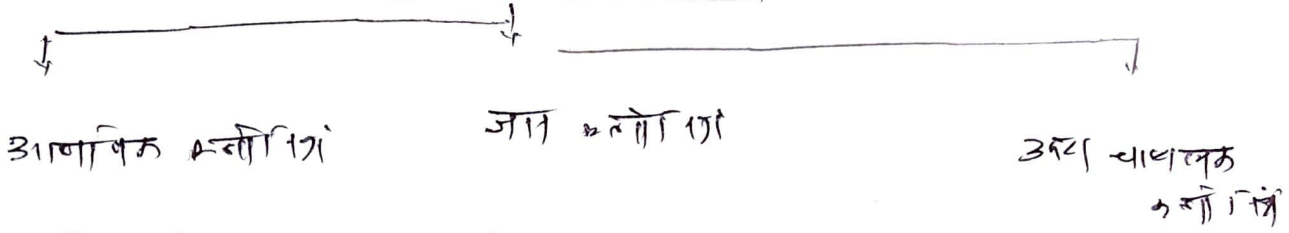
214] पैट्रो लिपम एक प्राकृतिक ईंधन है, जो श्रुपवर्ती के पड़ने वाले अव्योक्ति पदार्थों के साथ पाया जा सकता है। 'हाइड्रोकार्बन' का अर्थ, गाढ़े - भूरे रंग का तैलीय पदार्थ है। पैट्रो लिपम में विभिन्न अन्य अणु जैसे कैंसेरोजेन, आदि।



उष्णों त्रिपुं का वर्गीकरण :

उष्णों त्रिपुं एवं प्रयोग त्रिपुं के अनुसार उष्णों त्रिपुं को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

उष्णों त्रिपुं वर्गीकरण



आणविक / जैव उष्णों त्रिपुं : इसके अन्तर्गत जैव त्रिपुं यंत्रिका का प्रयोग कर 'सूक्ष्म जैव' तथा 'द्रव्य जैव' तैयार किया जाता है।  
उदाहरण : वायु त्रिपुं, वेब्ली त्रिपुं, मादि.

उष्ण यावत्क / जैव उष्णों त्रिपुं : इसमें द्रव्य त्रिपुं - अणुओं / आयुं को स्वयं सिद्ध / पुष्कर कणों के लिए 'सूक्ष्म जैव' को त्रिपुं द्वारा उष्णयुक्त किया जाता है।

उष्णों त्रिपुं नवो नवम जैव प्रयोग त्रिपुं का एक नया आविष्कार है। नैतिक एवं आर्थिक प्रयोगों के साथ इसके मानवीय उपयोगिता भी है।

उदा [ 'नैतिक' शब्द की व्युत्पत्ति एक शब्द 'नैतिक' से प्राप्त जानी है। जिसका शाब्दिक अर्थ - बौरा।  
नैतिक आकार के कणों का निर्माण नैतिक - विद्या कहलाता है।

प्रकार के कणों का आकार =  $10^{-9}$  -  $10^{-10}$

2E] शिकल में ही शरीरिका एक आनुवांशिक वीर्य है।  
 इस शरीर का कवच हीरो, लोको आणु की वीर्य (R)  
 गुणों का धूलका की वीर्य स्थिति में एक आणुिक  
 गुणवत्ता अन्तः का कवच (Vocal) का प्रति लक्षण  
 है।

उत्परि वर्तित हीरो शरीरिका आणु में बहती कवच हो जाता  
 है जिसके कवच एक का आकार ही अन्तः स्थिते में  
 कवच 'कवच' के आकार का हो जाता है।

अपचार की विधि

शिकल में ही शरीरिका में अपचार लक्षण किम लिखन  
 चिकित्सा पद्धतियां अपायी जा रही है।

1. 2 मों अपचार
2. कवच का धूलका
3. वीर्य में कवचान्त

इस अपचार के अन्तिम 'जीव धूलका' की एक कवच  
 अपाय है, जो शरीरिका में ही अपवर्ण कवच है।

2F] कवच की का शरीरिका अर्थ 'हयशकल' शरीर कवच है  
 कवच एक ही जीविक शरीरिका है जो एक-  
 मात्र जात (मान - चित्त) में अन्तः स्थित है।  
 उत्पन्न होती है। अन्तः स्थित शरीरिका  
 उत्पन्न शरीरिका अपने जात में शरीरिका और आणुिक  
 रूप में प्रकृति: संवर्ण होता है।  
 अन्तः स्थित जीव का प्रत्यक्ष शरीर कवच -  
 कवचिका कवचिका है।

• वाई (a) के भा। की गणा।  
• जि कर्ण गिति में व्युत्पन्न यादा 11 = 3.14.16

एकपै ल शास्त्र :- पृथ्वी का धूर्णन  
• प-कगु लो  
• धनुयर्ष  
एव मूर्धन्या का गति  
नया चक्र यंत्र का विग्रह  
आर्ष परमप ग्रुपे 121 शरीर

अनके योगग 129 मृति एष को त्रिक गणी -  
र-यपित्त प्रदा करने के लिए याद नें अया फरती  
र-वर्षा उपग्रह ' आर्षयुक्त ' उन्ही के गन पर रता।

2 D]

अत्रः 1-गामी ग्रथिया गलिडा विता हांसी है।  
अनके हावा 1-गामि 129 प्रथम हाकोन कर नाता है।  
जो रक्त के माध्यम से विनिय हांसी है।  
बहालन के रूप में थावयड,  
अत्रः 1-गामी ग्रथियो की कार्य प्रणाली विरुद्धी प्रथि  
कार्य प्रणाली निम्न वर :-

- हाकोन का नियंत्रण प्रकाश एव नियंत्रण का कार्य
- सनसक तत्र एव अगों के विग्रह में
- मनः स्थिति तथा व्यावहार्य सचाना में
- पितृवृद्धी ग्रथि मज्जिक्त के परवोर में अथ
- ग्रथियो के इजाव को नियंत्रित करना है।

अत्रः 2-गामी ग्रथिया जैव एडी ल, प्रोत्पल, पाइय अति  
के माध्यम से शारीरिक क्रियाओं का विवरण व सचाना तता है।





- चैंड विद्य - उच्च आगति न्यो > निम्न आगति न्यो
- माप - हर्ज (M.E)

14] चुंबकीय क्षेत्र में प्रति इकाई क्षेत्र को दर्शाते हुए क्षेत्रों को चिह्नित करने का नियम बताइए।  
 चुंबकीय क्षेत्र में प्रति इकाई क्षेत्र को दर्शाते हुए क्षेत्रों को चिह्नित करने का नियम बताइए।

- इकाई मापक - वेब, W.B
- चिह्न -  $\cdot$
- सूत्र -  $\vec{B} = \mu_0 \vec{I} \times \vec{r}$

15] 'कार्नेगी मैन एंड ' दूर दानेरी ' मा. चित्रण उपकरण ' है।  
 • उपयोग - तंत्रण युक्ति उपयोग, शांति एवं शांति उपकरण  
 • आवरण - धातु के तंत्रण नियंत्रण, जल नियंत्रण, यंत्रण  
 मजिस्ट्रल एंड (P.K) - 2016.

16]

10] जो एक क्लवले प्रणाली - पाठ्य और मासिक रूप से जो शांति -  
 निष्ठा की प्रणाली में यदि विलेन उच्च क्लवले है, जो  
 कीन प्रणाली. उच्च उच्चतरा एवं सूत्र चरित्र होती है।  
 उदाहरण - बी.पी. कपाय

अनुभव कला है, विद्वान वक्ता कहलाता है।  
 यह एक 'सिद्धि' शक्ति है।

1. [ ] सम्भावना से आशय किसी यादृच्छिक परीक्षण की  
 घटनाओं के घटित होने की मात्र (आवृत्ति) की मात्र  
 से है।

$P(E) = \frac{E \text{ के अद्वितीय परिणामों की संख्या}}{\text{प्रयोग के सभी संभव परिणामों की संख्या}}$

1. [ ] इनमें 3DR इयर्थ का निर्मित एक 'मौखिक उपकरण'  
 है जो आन्वीय आन्वीय उपकरण प्रणाली का संवाक्य है।  
 यह मौखिक एवं आन्वीय तथा आन्वीय श्रुत संवाक्य में -  
 आन्वीय लोका।  
 लक्षण - वर्ष 2016

1. [ ] जीव संज्ञा से आशय किसी जीव से स्थित जीव  
 एक उनके मध्य की दूरी से है।  
 उपयोग - जग का जीव की प्रकाश  
 अवस्था - आनुवंशिक विचारों की प्रकाश  
 यिकल में स्थिति। विशेष विचार उपदि।

1. [ ] प्रोटीन यह ले सब प्रोटीन प्रकाश की एक प्रकाश है जो  
 यह वो प्रोटीन से घटित होती है।  
 यह वो चरणों में होती है :-  
 1.

1. [ ] वेद विद्य से तात्पर्य संश्लेषण तंत्रों की 'उत्पत्ति'  
 एवं 'संरचना' आन्वीय प्रोटीन से है।  
 संश्लेषण तंत्रों की आन्वीय का स्थिति दर्शाता है।



D. 1

1A] इ-एनू एजेंसिज् एफ 'आर्थो मिस्जो निरडे' कुन के 'RNA' वाक्य लेते हैं।

- यी चार प्रकार A, B, C, एव D में पाये जाते हैं।
- सायाय बकार - वृष्ण, धाकी, शया रिपा मे बध्या इन्फि
- बीपी - बडे एनू

1B] डि क लण एके योगशील यौगिक होते हैं, जो जलीन विलायक चाने पर अपने संघटक आयनों में डूब जाते हैं। उदाहरण -  $FeSO_4$ , पोटशु एव  $K_2SO_4$ ,  $Al_2(SO_4)_3$

1C] ए निपा ग्रीफी एके, इयै जिं  $\alpha$  तकीक है जो  $\alpha$  मध्य की लक्षणों से शरीर में शकक एव 'एव वारि निपा' का परीक्षण करता है।

- इ मेज को, एनिपो कप कहा जाता है

1D] कापी राडर एके काशी आण्का है जो रिपा-मूल कार्य के लिये उसके मूजा कर्ता को विशेषाधिकार प्रदा करता है।

- कापी राडर के संकेण, लंबकी हेतु 'कापी राडर अधि निपा-1957' बनाया गया है।
- कापी राडर के कुल दोष - कला, मालिय, मीत अदि।

1E]

1F] रिपी विपुत आण् के चाये एरके का एर दोउ निपये कोइ अन्य आण् आकर्मण या प्राति कर्ण वर का